परमागम प्रवेशिका
भाग-1

डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया

परमागम प्रवेशिका

भाग 1

लेखिका

विद्वत्रत्न डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया

बी.ए.ऑनर्स, एम.ए., पी.एच.डी. (स्वर्णपदक प्राप्त)

मो. 09321295265 / Email: dpptmumbai@gmail.com

मुंबई (महाराष्ट्र)

प्रकाशक

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

ए-4, बापूनगर, जयपुर-302 015

फोन : 0141-2707458, 2705581

E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

प्रथम संस्करण : 2 हजार

15 अगस्त, 2021

मूल्य : 5 रुपये

मुद्रक : रेनबो ऑफसेट, जयपुर

प्रकाशकीय

इस पुस्तक परमागम प्रवेशिका की लेखिका डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया बचपन से ही प्रतिभाशाली रही हैं। विद्वत्ता की दृष्टि से वे पिताश्री डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल के पदचिन्हों पर ही चल रही हैं।

अभी तक लिखित आपकी सभी कृतियाँ अध्यात्मरस से सराबोर और भेदज्ञान से ओतप्रोत हैं। साथ-ही-साथ आपने जैन सिद्धान्तों पर आधारित अनेक गेम्स भी बनाए हैं। इन गेम्स की विशेषता यह है कि इनको खेलने से बच्चों को सैद्धान्तिक ज्ञान मिलता है और उनमें अहिंसात्मक आचरण की प्रवृत्ति भी सहज विकसित हो जाती है। इनमें जीत हिंसात्मक कार्य मार-पीट से नहीं, ज्ञान-ध्यान से हासिल की जाती है।

आपके द्वारा लिखी गई बाल पुस्तकें भी अन्य पाठ्यपुस्तकों से भिन्न शैली, रंगीन चित्रमय प्रस्तुति एवं मूल तत्वज्ञान के समावेश के कारण अपनी विशिष्ट पहचान रखती हैं।

प्रस्तुत पुस्तक परमागम प्रवेशिका (भाग १) जैन आगम - परमागम रूपी किला में प्रवेश के इच्छुक आत्मार्थियों के लिए प्रवेशद्वार के समान है।

जैन शास्त्रों की शब्दावली से अपरिचित पाठकों को लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी रहेगी। इसी भावना से प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है।

शीघ्र प्रकाशन व्यवस्था के लिए डॉ. अखिल बंसल का विशेष आभार।

परमात्मप्रकाश भारिल्ल

कार्यकारी महामंत्री-पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट,

अपनी बात

'परमागम ऑनर्स' कोर्स की जानकारी लेते समय और उनमें पढने के लिए प्रवेश करते समय प्रत्येक प्रबुद्ध व्यक्ति के ह्रदय में सर्वप्रथम यही शंका उठती है कि क्या आगम और परमागम में भी अंतर होता है? क्या अंतर है दोनों में ?अतः प्रस्तुत पुस्तक में इस शंका का समाधान सर्व प्रथम किया गया है।

आगम शास्त्र को कहते हैं। जैनागम में अध्यात्म शास्त्रों को परमागम कहा जाता है। जिसकी विशेष चर्चा इसी पुस्तक में की जाएगी।

'परमागम ऑनर्स' में प्रवेश पाने के पश्चात् पढ़ाई करते समय भी जिज्ञासु छात्रों के मन में कोर्स से हट कर अनेकों प्रश्न उठते हैं।

सीमित समय में उन सभी का हल कक्षा (क्लास) में देना संभव नहीं हो पाता; अतः ऐसे संभावित प्रश्नों को भी उत्तर सहित इस पुस्तक में दिया गया है।

यह पुस्तक उन सभी आत्मार्थियों के लिए भी विशेष उपयोगी है, जो जैन सिद्धान्तों से नितान्त अपरिचित हैं।

'परमागम ऑनर्स' के विद्यार्थियों को अपनी कोर्स की पढ़ाई आरंभ करने के पूर्व इन्हें स्वयं पढ़ लेना चाहिए , ताकि वे आगे की विषयवस्तु आसानी से समझ सकें।

यद्यपि यह पुस्तक 'परमागम ऑनर्स' के विद्यार्थियों के पास विगत 3 वर्षों से E-book के रूप में पहुँच रही है; किन्तु श्रीमती आभा सुनील जैन, सिडनी (ऑस्ट्रेलिया) की भावना है कि 'परमागम प्रवेशिका' के तीनों भाग छात्रों के पास अतिशीघ्र पुस्तक रूप में पहुँचे; अतः उन्होंने सभी छात्रों में पुस्तकों के वितरण हेतु रु 20,000/- की राशि प्रदान की है। पुस्तक के शीघ्र प्रकाशन की प्रेरणा देने का उनका यह अनूठा प्रयास सराहनीय है।

डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया

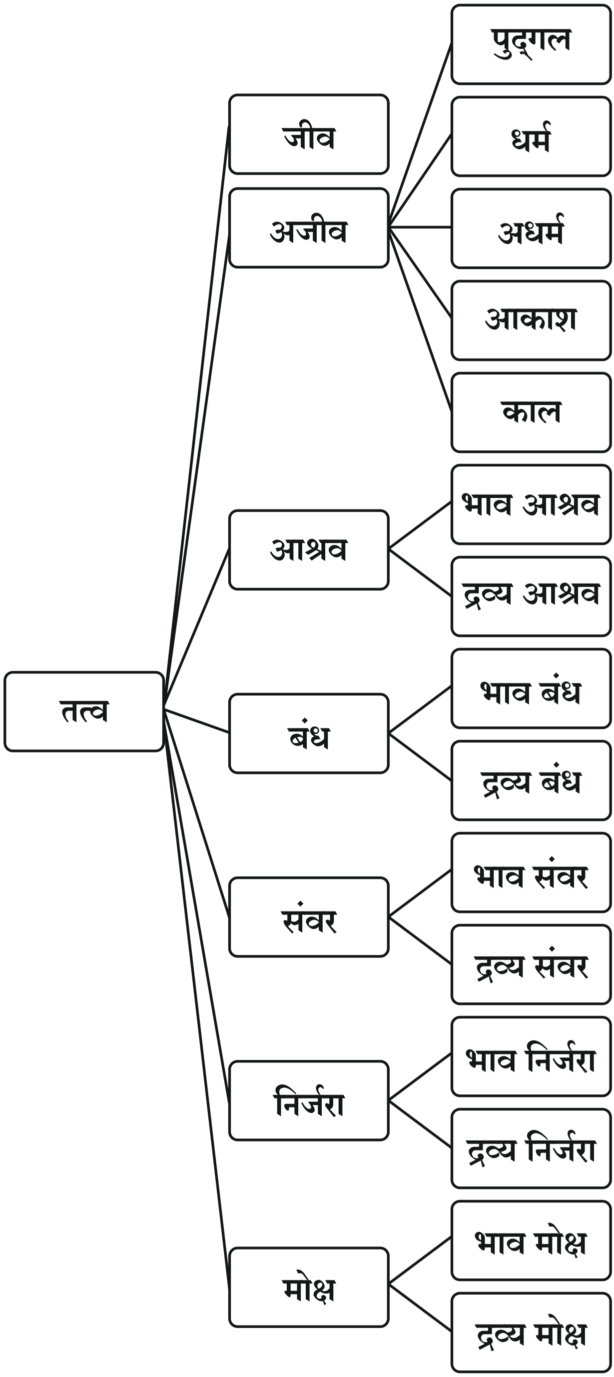
तत्व
जीव
अजीव
पुद्गल
धर्म
अधर्म
आकाश
काल
आश्रव
भाव आश्रव
द्रव्य आश्रव
बंध
भाव बंध
द्रव्य बंध
संवर
भाव संवर
द्रव्य संवर
निर्जरा
भाव निर्जरा
द्रव्य निर्जरा
मोक्ष
भाव मोक्ष
द्रव्य मोक्ष

परमागम प्रवेशिका

भाग 1

प्रश्न 1 – आगम किसे कहते हैं?

उत्तर – सच्चे देव की वाणी को आगम कहते हैं।

प्रश्न 2 – परमागम किसे कहते हैं? और क्यों?

उत्तर – अध्यात्म शास्त्रों को परमागम कहते हैं।

प्रश्न 3 – सच्चा सुख किसे कहते हैं?

उत्तर – निराकुल सुख अर्थात् आकुलता रहित सुख को सच्चा सुख कहते हैं। इसे अतीन्द्रिय सुख भी कहा जाता है। यह इन्द्रियों से नहीं, आत्मा से सीधा होता हैं; अतः इन्द्रिय सुख से भिन्नता बताने के लिए इसे अतीन्द्रिय सुख कहते हैं।

प्रश्न 4 – इन्द्रिय सुख किसे कहते हैं? क्या यह भी सच्चा सुख है?

उत्तर – इन्द्रियों द्वारा भोगे जाने वाले विषय भोगरूप सुख को इन्द्रिय सुख कहते हैं । आकुलता सहित होने से वह सच्चा सुख नहीं है, दुःख का ही रूप है। जब आकुलता कम होती है, तब जीव अपने को सुखी मानते हैं; वस्तुतः वे सुखी नहीं दुःखी ही हैं। जैसे – भूख लगने पर जीव अधिक दुःखी था, व्याकुल था। जब पेट भरा तो आकुलता कुछ कम हुई तो जीव अपने को सुखी मानने लगता है।

प्रश्न 5 – सच्चा सुख कैसे प्राप्त होता है?

उत्तर – सच्चा सुख रत्नत्रय से प्राप्त होता है।

प्रश्न 6 – रत्नत्रय किसे कहते हैं?

उत्तर – सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चरित्र को रत्नत्रय कहते हैं।

प्रश्न 7 – भगवान किसे कहते हैं? उन्हें सच्चा देव क्यों कहा जाता है?

उत्तर – जो वीतरागी और सर्वज्ञ हो, उन्हें भगवान कहते हैं। स्वर्ग के देवों से भिन्नता बताने के लिए उन्हें सच्चा देव कहा जाता है ।

प्रश्न 8 – क्या कोई जीव जन्म से भगवान हो सकता है?

उत्तर – नहीं, कोई जीव जन्म से भगवान नहीं होता। जीव आत्म साधना के अपूर्व पुरुषार्थ द्वारा भगवान बनते हैं।

प्रश्न 9 – भगवान महावीर की तो जन्मजयन्ती मनाई जाती है, उनका तो जन्म हुआ था? यह कहा भी जाता है – कैसे?

उत्तर – जन्म तो बालक वर्द्धमान का हुआ था। जब राजकुमार वर्द्धमान ने मुनिदीक्षा लेकर आत्मसाधना की तभी वे भगवान बने। चूँकि वह उनका अन्तिम जन्म था, अतः बालक वर्द्धमान के अंतिम जन्मदिन को भगवान महावीर के जन्मदिन के रूप में मनाया जाता है, और भूतकाल की अपेक्षा उसे भगवान महावीर का जन्मदिन कहा जाता है।

प्रश्न 10– तीर्थंकर आदिनाथ ने किस घटना से वैरागी होकर दीक्षा ली थी?

उत्तर – तीर्थंकर दीक्षा नहीं लेते। दीक्षा तो राजा ऋषभदेव ने नृत्य करती नीलांजना की मृत्यु देखकर संसार की क्षणभंगुरता का भान होने पर ली थी।

प्रश्न 11 – वीतरागी किसे कहते हैं?

उत्तर – जो राग–द्वेष रहित हो उसे वीतरागी कहते हैं।

प्रश्न 12 – राग किसे कहते हैं?

उत्तर – किसी को भला जानकर चाहने को राग कहते हैं।

प्रश्न 13 – द्वेष किसे कहते हैं?

उत्तर – किसी को बुरा जानकर दूर करने की चाह को द्वेष कहते हैं।

प्रश्न 14 – सर्वज्ञ किसे कहते हैं?

उत्तर – सर्व लोकालोक और सब काल के समस्त द्रव्यों की समस्त पर्यायों को एक समय में एक साथ जानने वाले को सर्वज्ञ कहते हैं।

प्रश्न 15 – भगवान के अन्य पर्यायवाची नाम बताइए।

उत्तर – जिन, केवली, अरहंत, सिद्ध, परमेष्ठी, परमात्मा और तीर्थंकर – इन शब्दों का प्रयोग भी भगवान के अर्थ में ही होता है। विभिन्न अपेक्षाओं से उनके ये भिन्न–भिन्न नाम कहे गए हैं।

प्रश्न 16 – भगवान को जिन क्यों कहा जाता है?

उत्तर – इन्द्रियों के जीतने की अपेक्षा उन्हें जिन कहा जाता है। यह दो प्रकार के होते हैं – सयोगीजिन और अयोगीजिन।

प्रश्न 17 – भगवान को केवली क्यों कहा जाता है?

उत्तर – केवलज्ञान प्राप्त करने की अपेक्षा भगवान को केवली कहा जाता है। यह दो प्रकार के होते हैं – सयोग केवली और अयोग केवली।

प्रश्न 18 – योग किसे कहते हैं?

उत्तर – मन, वचन और काय के कंपन को योग कहते हैं।

प्रश्न 19 – सयोगी जिन और सयोग केवली किसे कहते हैं?

उत्तर – जो योग सहित होते हैं, उन्हें सयोगी जिन अथवा सयोग केवली कहते हैं । जैसे –अरिहंत ।

प्रश्न 20 – अयोगी जिन और अयोग केवली किसे कहते हैं?

उत्तर – जो योग रहित होते हैं, उन्हें अयोगीजिन अथवा अयोग केवली कहते हैं । जैसे– सिद्ध ।

प्रश्न 21 – अरिहंत किसे कहते हैं?

उत्तर – मोह–राग–द्वेष रूपी शत्रु अर्थात् चार घाति कर्मों को नष्ट करनेवाले शरीर सहित, वीतरागी, सर्वज्ञ, भगवान को अरिहंत कहते हैं ।

प्रश्न 22 – सिद्ध किसे कहते हैं?

उत्तर – आठों कर्मों (चार घाति और चार अघाति कर्म) को नष्ट करने वाले शरीर रहित भगवान को सिद्ध कहते हैं।

प्रश्न 23 – भगवान को परमेष्ठी क्यों कहते हैं?

उत्तर – परमपद में स्थित होने से भगवान को परमेष्ठी कहते हैं।

प्रश्न 24 – तीर्थंकर किसे कहते हैं?

उत्तर – जो धर्मतीर्थ का उपदेश देते हैं, समवशरण आदि विभूति से युक्त होते हैं, जिनके तीर्थंकर नामकर्म का उदय होता है; उन्हें तीर्थंकर कहते हैं।

सभी तीर्थंकर भगवान होते हैं, पर सभी भगवान तीर्थंकर नहीं होते। भगवान अनन्त हो सकते हैं, पर भरत, एरावत क्षेत्रों में तीर्थंकर २४ ही होते हैं और उनके ५ कल्याणक होते हैं।

प्रश्न 25 – तीर्थंकर प्रकृति के बाद अधिक से अधिक कितने भव हो सकते हैं?

उत्तर – तीर्थंकर प्रकृति के बाद अधिक से अधिक ३ भव हो सकते हैं ।

प्रश्न 26 – पंचकल्याणक किसे कहते हैं?

उत्तर – तीर्थंकरों के जीवनकाल की पाँच प्रमुख घटनाओं को पंचकल्याणक कहते हैं। वे निम्न हैं – गर्भकल्याणक, जन्मकल्याणक, दीक्षाकल्याणक, केवलज्ञानकल्याणक और मोक्षकल्याणक।

प्रश्न 27 – समवशरण किसे कहते हैं? उसे कौन बनाता है?

उत्तर – तीर्थंकरों के उपदेश देने वाली सभा को समवशरण कहते हैं। इसे सौधर्मइन्द्र की आज्ञा से कुबेर बनाता है।

प्रश्न 28 – समवशरण के मध्य भगवान के बैठने के स्थान को क्या कहते हैं?

उत्तर – समवशरण के मध्य भगवान के बैठने के स्थान को गंधकुटी कहते हैं ।

प्रश्न 29 – तीर्थंकरों द्वारा दिए जाने वाले उपदेश को क्या कहते हैं?

उत्तर – तीर्थंकरों द्वारा दिए जाने वाले उपदेश को दिव्यध्वनि कहते हैं ।

प्रश्न 30 – समवशरण में उपस्थित तीर्थंकर के प्रमुख श्रोता मुनिराजों को क्या कहते हैं?

उत्तर – गणधर – ये चार ज्ञान के धारी श्रुत केवली मुनिराज ही होते हैं। ये तीर्थंकर की वाणी पूर्णरूप से ग्रहण करते हैं और द्वादशांग रूप से व्यवस्थित करते हैं।

प्रश्न 31 – क्या तीर्थंकरों को अपने भक्तों को प्रेरणा देने की इच्छा होती है?

उत्तर – नहीं, क्यों कि जो समस्त इच्छाओं का अभाव कर वीतरागी हो जाते हैं, वे ही तीर्थंकर बनते हैं। अतः उन्हें किसी को प्रेरणा देने की इच्छा नहीं होती, किन्तु उनके उपदेश को सुनकर भव्यजीव स्वयं प्रेरित होकर, उनके बताए मार्ग पर चलकर स्वयं ही भगवान बनते हैं।

प्रश्न 32 – भव्य किसे कहते हैं?

उत्तर – जिन संसारी जीवों में मोक्ष जाने की योग्यता होती है, उन्हें भव्य कहते हैं।

परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि सारे भव्य जीव अवश्य ही मुक्त हो जायेंगे। यदि यह जीव सम्यक् पुरुषार्थ करे तो मुक्त हो सकता है, अन्यथा नहीं।

प्रश्न 33 – अभव्य समान भव्य किसे कहते हैं?

उत्तर – भव्य में भी कुछ ऐसे होते है जो कभी भी उसप्रकार का पुरुषार्थ नहीं करेंगे, ऐसे जीवों को अभव्य समान भव्य कहते हैं।

प्रश्न 34 – दुरानुदुर भव्य किसे कहते हैं?

उत्तर – जो अनंत काल जाने पर पुरुषार्थ करेंगे, उन्हें दुरानुदुर भव्य कहते हैं।

प्रश्न 35 – अभव्य किसे कहते हैं?

उत्तर – मोक्ष जाने की योग्यता रहित संसारी जीवों को अभव्य कहते हैं।

प्रश्न 36 – विश्व किसे कहते हैं?

उत्तर – छह द्रव्यों के समूह को विश्व कहते हैं।

प्रश्न 37 – क्या विश्व का कभी नाश हो सकता है?

उत्तर – नहीं, क्योंकि द्रव्यों का कभी नाश नहीं होता।

प्रश्न 38 – द्रव्य किसे कहते हैं? वे कितने हैं? नाम बतायें।

उत्तर – गुणों के समूह को द्रव्य कहते हैं । वे छह होते हैं – जीव, पुद्‌गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल।

प्रश्न 39 – जीव किसे कहते हैं?

उत्तर – ज्ञान दर्शन स्वभावी आत्मा को जीव कहते हैं। जीव ही सुख–दुःख का अनुभव करते हैं।

प्रश्न 40 – अजीव किसे कहते हैं?

उत्तर – जीव को छोड़कर ज्ञानदर्शन स्वभाव से रहित शेष पाँच द्रव्यों को अजीव कहते हैं।

प्रश्न 41 – सजीव, निर्जीव और अजीव में क्या अन्तर है?

उत्तर – आत्मा सहित शरीर को सजीव कहा जाता है। जैसे– चींटी, हाथी, कबूतर, हम–तुम आदि सभी सजीव हैं।

जिस शरीर से जीव (आत्मा),निकल जाता है, उसे निर्जीव कहते हैं। जैसे – शव।

जिसमें जीव कभी नहीं रहता, उन वस्तुओं को अजीव कहते हैं। जैसे – टेबल, पंखा, ट्रेन आदि।

प्रश्न 42 – हाथी जीव है या अजीव?

उत्तर – हाथी की आत्मा जीव है और शरीर अजीव है।

प्रश्न 43 – क्या शरीर को किसी अपेक्षा जीव कहा जाता है?

उत्तर – हाँ, जिस शरीर में आत्मा रहता है, उस शरीर को व्यवहारनय से जीव कहा जाता है। जैसे – चींटी, कबूतर आदि।

प्रश्न 44 – पुद्‌गल किसे कहते हैं?

उत्तर – जिसमें स्पर्श, रस, गंध और वर्ण पाया जाये, उसे पुद्‌गल कहते हैं। हम जो कुछ भी इन्द्रियों द्वारा जानते हैं, वह सब पुद्‌गल ही है।

प्रश्न 45 – पुद्‌गल में कितने भेद हैं?

उत्तर – पुद्‌गल में २ भेद हैं– परमाणु और स्कंध।

प्रश्न 46 – परमाणु किसे कहते हैं?

उत्तर – जिसका दूसरा विभाग नहीं हो सकता –ऐसे सबसे सूक्ष्म पुद्‌गल को परमाणु कहते हैं।

प्रश्न 47 – स्कंध किसे कहते हैं?

उत्तर – दो या दो से अधिक परमाणुओं के बंध को स्कंध कहते हैं।

प्रश्न 48 – बंध किसे कहते हैं?

उत्तर – जिस सम्बन्ध विशेष से अनेक वस्तुओं में एकपने का ज्ञान होता है, उस सम्बन्ध विशेष को बंध कहते हैं।

प्रश्न 49 – धर्मद्रव्य किसे कहते हैं?

उत्तर – जो स्वयं चलते हुए जीव और पुद्गलों के चलने में निमित्त होता है, उसे धर्मद्रव्य कहते हैं। जैसे–जल मछली के चलने में निमित्त है।

प्रश्न 50 – अधर्मद्रव्य किसे कहते हैं?

उत्तर – जो गमनपूर्वक ठहरने वाले जीव और पुद्गलों के ठहरने में निमित्त होता है, उसे अधर्मद्रव्य कहते है । जैसे– वृक्ष की छाया पथिकों को ठहरने में निमित्त होती है।

प्रश्न 51 – आकाशद्रव्य किसे कहते हैं?

उत्तर – जो सब द्रव्यों के रहने में (अवगाहन में) निमित्त हो, उसे आकाशद्रव्य कहते हैं। यह सब जगह व्यापक है। दुनिया में ऐसी कोई जगह नहीं, जहाँ आकाश न हो। यह अरूपी होता है। इसमें कोई रंग नहीं होता। जो नीला आकाश हमें नजर आता है, वह तो पुद्गल द्रव्य है।

प्रश्न 52 – आकाश के कितने भेद है और क्यों?

उत्तर – यद्यपि आकाश एक ही अखंड द्रव्य है, तथापि छहों द्रव्यों की उपस्थिति व अनुपस्थिति के कारण उसके दो भेद होते हैं –लोकाकाश और अलोकाकाश ।

प्रश्न 53 – लोकाकाश किसे कहते हैं?

उत्तर – जिसमें जीवादि समस्त द्रव्य पाए जाते हैं, उसे लोकाकाश कहते हैं।

प्रश्न 54 – अलोकाकाश किसे कहते हैं?

उत्तर – लोकाकाश के बाहर अनंत आकाश को अलोकाकाश कहते हैं।

प्रश्न 55 – काल दव्य किसे कहते हैं?

उत्तर – जो सब द्रव्यों के परिणमन में निमित्त हो, उसे काल द्रव्य कहते हैं । काल का सबसे छोटा अंश समय कहलाता है।

प्रश्न 56 – काल के कितने भेद है?

उत्तर – काल के २ भेद हैं:– निश्चयकाल और व्यवहारकाल।

प्रश्न 57 – निश्चयकाल किसे कहते हैं।

उत्तर – कालद्रव्य को निश्चयकाल कहते हैं । एक–एक कालद्रव्य (कालाणु) लोकाकाश के एक – एक प्रदेश पर स्थित है।

प्रश्न 58 – व्यवहारकाल किसे कहते हैं?

उत्तर – वर्ष, महीना, दिन, पल आदि को व्यवहारकाल कहते है।

प्रश्न 59 – अस्तिकाय किसे कहते हैं? वे कितने हैं।

उत्तर – बहुप्रदेशी (अनेकप्रदेशी) द्रव्य को अस्तिकाय कहते हैं। काल को छोड़कर शेष पाँच द्रव्य अस्तिकाय हैं।

प्रश्न 60 – कालद्रव्य अस्तिकाय क्यों नहीं हैं?

उत्तर – एकप्रदेशी होने से कालद्रव्य अस्तिकाय नहीं है।

प्रश्न 61 – एकप्रदेशी परमाणु अस्तिकाय कैसे है?

उत्तर – स्कन्धरूप होकर बहुप्रदेशी होने की शक्ति के कारण पुद्गल परमाणु भी आस्तिकाय हैं।

प्रश्न 62 – प्रदेश किसे कहते हैं?

उत्तर – आकाश के जितने भाग को एक पुद्गल परमाणु घेरता है, उसे प्रदेश कहते हैं।

प्रश्न 63 – गुण किसे कहते हैं?

उत्तर – जो द्रव्य के सम्पूर्ण भागों और उनकी सम्पूर्ण अवस्थाओं में रहते हैं, उन्हें गुण कहते हैं। जैसे – ज्ञान आत्मा का गुण है, वह आत्मा के समस्त प्रदेशों में और निगोद से लेकर मोक्ष तक की समस्त अवस्थाओं में पाया जाता है।

प्रश्न 64 – क्या द्रव्य गुणों का भण्डार है?

उत्तर – नहीं, द्रव्य गुणों का अखण्ड पिण्ड है। द्रव्य से अलग गुणों की पृथक् सत्ता नहीं होती है।

प्रश्न 65 – गुण कितने प्रकार के होते हैं? नाम बताइए।

उत्तर – गुण दो प्रकार के होते हैं – विशेष गुण और सामान्य गुण।

प्रश्न 66 – विशेष गुण किसे कहते हैं?

उत्तर – जो सब द्रव्यों में न रहकर अपने–अपने द्रव्य में हों, उन्हें विशेष गुण कहते हैं। विशेष गुण से द्रव्य भिन्न–भिन्न सिद्ध होते हैं । जैसे – ज्ञान गुण सिर्फ आत्मा में ही पाया जाता है। आत्मा में ज्ञान जैसे अनंत गुण हैं।

प्रश्न 67 – सामान्य गुण किसे कहते हैं? वे कितने होते हैं? नाम बताइए।

उत्तर – जो सब द्रव्यों में रहते हैं, उन्हें सामान्य गुण कहते हैं। जैसे – अस्तित्व गुण सब द्रव्यों में रहता है, अतः वह सामान्य गुण है। सामान्यगुण अनन्त होते हैं। सामान्य गुणों के आधार पर ही सभी द्रव्यों में समानता स्थापित की जाती है।जिनमें मुख्य छह हैं – अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व, प्रमेयत्व, अगुरुलघुत्व और प्रदेशत्व।

प्रश्न 68 – अस्तित्वगुण किसे कहते हैं?

उत्तर – जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कभी नाश न हो, उसे अस्तित्वगुण कहते हैं।

प्रत्येक द्रव्य की सत्ता स्वयं से है, उसे किसी ने बनाया नहीं है. क्योंकि प्रत्येक द्रव्य में अस्तित्व गुण है। अस्तित्व गुण मात्र है बताता है। मुझमें अस्तित्व गुण है, अतः मेरा कोई नाश नहीं कर सकता – ऐसा ज्ञान होने पर जीव में अनन्त निर्भयता आ जाती है।

प्रश्न 69 – वस्तुत्वगुण किसे कहते हैं?

उत्तर – जिस शक्ति के कारण द्रव्य में प्रयोजनभूत क्रिया हो, उसे वस्तुत्व गुण कहते हैं । इस गुण की मुख्यता से ही द्रव्य को वस्तु कहा जाता है । यह गुण बताता है कि लोक में कोई भी वस्तु पर के प्रयोजन की नहीं है, पर प्रत्येक वस्तु अपने-अपने प्रयोजन से युक्त है, निरर्थक नहीं है अर्थात् लोक में प्रत्येक वस्तु अपना कार्य करने में पूर्णतः सक्षम है और उन्हें अपने प्रयोजन की पूर्ति के लिए पर की रंचमात्र आवश्यकता नहीं है, पराधीनता नहीं है।

इसी गुण के कारण आत्मा और शरीर एक साथ रहते हुए भी एकदूसरे रूप नहीं होते हैं, भिन्न-भिन्न ही रहते हैं। प्रत्येक द्रव्य के गुण भी आपस में एकरूप नहीं होते हैं, भिन्न-भिन्न ही रहते हैं। जैसे – आम का हरा रंग मीठे रस में परिवर्तित नहीं होता; अपितु रंग गुण का परिवर्तन रंग गुण में ही होता है और रस गुण का परिवर्तन रस गुण में ही होता है।

प्रश्न 70 – द्रव्यत्व गुण किसे कहते हैं?

उत्तर – जिस शक्ति के कारण द्रव्य की अवस्था निरन्तर बदलती रहे, इसे द्रव्यत्व गुण कहते हैं । इस गुण की मुख्यता से वस्तु को द्रव्य कहा जाता है।

यह गुण द्रव्य की निरन्तर परिणमनशीलता बतलाता है। यह गुण बताता है कि एक द्रव्य में परिवर्तन का कारण कोई दूसरा द्रव्य नहीं है, न ही उसे स्वयं के परिणमन में पर की अपेक्षा है।

प्रश्न 71 – प्रमेयत्व गुण किसे कहते हैं?

उत्तर – जिस शक्ति के कारण द्रव्य किसी न किसी के ज्ञान का विषय अवश्य हो, उसे प्रमेयत्व गुण कहते हैं।

प्रश्न 72 – अगुरुलघुत्व गुण किसे कहते हैं?

उत्तर – जिस शक्ति के कारण द्रव्य में द्रव्यपना कायम रहता है, उसे अगुरुलघुत्व गुण कहते हैं। इसी शक्ति के कारण एक द्रव्य दूसरे द्रव्य रूप नहीं होता, एक गुण दूसरे गुणरूप नहीं होता और एक द्रव्य में रहने वाले अनन्त गुण बिखरकर अलग-अलग नहीं होते हैं।

प्रश्न 73 – प्रदेशत्व गुण किसे कहते हैं?

उत्तर – जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कोई न कोई आकार अवश्य रहता है, उसे प्रदेशत्व गुण कहते हैं। जैसे – आत्मा संसारी अवस्था में शरीर के आकार का रहता है और सिद्ध होने पर भी अंतिम शरीर से किंचित् न्यून आकार में रहता है।

प्रश्न 74 – पर्याय किसे कहते हैं?

उत्तर – गुणों में होने वाले प्रति समय के परिवर्तन को पर्याय कहते हैं।

प्रश्न 75 – गति किसे कहते हैं? वे कितनी हैं? नाम बताइए?

उत्तर – जीव की अवस्था विशेष को गति कहते हैं। वे चार हैं – देव, नरक, तिर्यंच और मनुष्य।

प्रश्न 76 – देवायु के बंध के कारण क्या हैं?

उत्तर – संयम के साथ रहने वाले शुभभाव रूप रागांश, असंयमांश मंद कषायरूप भाव और अज्ञानपूर्वक किए गए तप के भाव देवायु के बंध के कारण हैं।

प्रश्न 77 – नरकायु के बंध के कारण क्या हैं?

उत्तर – बहुत आरंभ और बहुत परिग्रह का भाव ही नरकायु के बंध के कारण हैं।

प्रश्न 78 – तिर्यंच आयु के बंध के कारण क्या हैं?

उत्तर – छल–कपट,मायाचारी के भाव तिर्यंच आयु के बंध के कारण हैं।

प्रश्न 79 – मनुष्य– आयु के बंध के कारण क्या हैं?

उत्तर – अल्प आरंभ और अल्प परिग्रह रखने के भाव एवं स्वभाव की सरलता मनुष्य– आयु के बंध के कारण हैं।

प्रश्न 80 – आरंभ किसे कहते हैं?

उत्तर – प्राणियों को दुःख (पीड़ा) पहुँचाने वाली प्रवृत्ति को आरंभ कहते हैं।

प्रश्न 81 – इन्द्रिय किसे कहते हैं? वे कितनी होती हैं? नाम बताइए?

उत्तर – संसारी आत्मा को ज्ञान में निमित्त शरीर के चिन्ह विशेष को ही इन्द्रिय कहते हैं। वे पाँच होती हैं – स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण।

प्रश्न 82 – यदि इन्द्रयाँ ज्ञान में मात्र निमित्त हैं, तो जानता कौन है? तर्क सहित बताइए?

उत्तर – जानने वाला आत्मा है। यदि इन्द्रियों से ज्ञान होता तो मुर्दे को भी जानना–देखना चाहिए।

प्रश्न 83 – इन्द्रिय ज्ञान तुच्छ क्यों है?

उत्तर – क्योंकि इन्द्रियाँ मात्र पुद्‌गल के ज्ञान में ही निमित्त हैं, आत्मज्ञान में नहीं।

प्रश्न 84 – विभाव किसे कहते हैं?

उत्तर – स्वाभाव के विपरीत भाव को विभाव कहते हैं।

प्रश्न 85 – पाप किसे कहते हैं?

उत्तर – दु:ख के कारण बुरे कार्य को पाप कहते हैं। मिथ्यात्व और कषायें दु:ख के कारण होने से पाप हैं।

प्रश्न 86 – सबसे बड़ा पाप कौनसा है?

उत्तर – मिथ्यात्व।

प्रश्न 87 – मिथ्यात्व किसे कहते हैं?

उत्तर – आत्मा संबंधी उल्टी मान्यताओं को मिथ्यात्व कहते हैं।

प्रश्न 88 – मिथ्यात्व छूटता कैसे है?

उत्तर – आत्मा की सही समझ से ही मिथ्यात्व छूटता है।

प्रश्न 89 – कषाय किसे कहते हैं? वे कितनी होती हैं? नाम बताइए।

उत्तर – जो आत्मा को कसे अर्थात् दु:ख दे, उसे कषाय कहते हैं। वे चार होती हैं – क्रोध, मान, माया और लोभ।

प्रश्न 90 – कषाय उत्पन्न क्यों होती है?

उत्तर – मुख्यतया मिथ्यात्व के कारण परपदार्थ इष्ट या अनिष्ट भासित होने से कषायें उत्पन्न होती हैं।

प्रश्न 91 – कषायें कब उत्पन्न नहीं होती हैं?

उत्तर – तत्त्वज्ञान के अभ्यास से जब परपदार्थ इष्ट या अनिष्ट भासित न हो तो मुख्यतया कषायें भी उत्पन्न नहीं होती।

प्रश्न 92 – क्या कषायों में प्रमाद का अन्तर्भाव किया जाता सकता है? क्यों?

उत्तर – हाँ! क्योंकि कषायों से पृथक् प्रमाद नहीं पाया जाता है; अतः कषायों में प्रमाद का अन्तर्भाव किया जा सकता है।

प्रश्न 93 – प्रमाद किसे कहते हैं?

उत्तर – कषाय सहित अवस्था को प्रमाद कहते हैं।

प्रश्न 94 – तत्त्व किसे कहते हैं?

उत्तर – वस्तु के सच्चे स्वरूप को अर्थात् जो वस्तु जैसी है, उसके उसी भाव को तत्त्व कहते हैं।

प्रश्न 95 – प्रयोजनभूत तत्त्व कितने होते हैं? नाम बताओ?

उत्तर – प्रयोजनभूत तत्त्व सात होते हैं – जीव, अजीव, आश्रव, बंध, सवर, निर्जरा और मोक्ष।

प्रश्न 96 – जीवतत्त्व किसे कहते हैं?

उत्तर – ज्ञान–दर्शन स्वभावी आत्मा को जीवतत्त्व कहते हैं।

प्रश्न 97 – अजीवतत्त्व किसे कहते हैं?

उत्तर – ज्ञान दर्शन से रहित तथा आत्मा से भिन्न सभी (पदार्थों) द्रव्यों को अजीवतत्त्व कहते हैं।

प्रश्न 98 – आश्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष के कितने भेद हैं? नाम बताइए?

उत्तर – आश्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष इन सभी के दो-दो भेद हैं - भावाश्रव-द्रव्याश्रव, भावबंध-द्रव्यबंध, भावसंवर-द्रव्यसंवर, भावनिर्जरा-द्रव्यनिर्जरा और भाव मोक्ष-द्रव्य मोक्ष।

प्रश्न 99 – भावाश्रव किसे कहते हैं?

उत्तर – आत्मा में उत्पन्न होनेवाले मोह, राग, द्वेष भावों को भावाश्रव कहते हैं।

प्रश्न 100 – द्रव्याश्रव किसे कहते हैं?

उत्तर – भावाश्रव के निमित्त से आत्मा के प्रदेशों में ज्ञानावरणादि कर्मों के स्वयं आने को द्रव्याश्रव कहते हैं।

प्रश्न 101 – भावबंध किसे कहते हैं?

उत्तर – आत्मा का अज्ञान, मोह, राग, द्वेष, पुण्य-पाप आदि विभाव भावों में रुक जाने को भावबंध कहते हैं।

प्रश्न 102 – द्रव्यबंध किसे कहते हैं?

उत्तर – भावबंध के निमित्त से आत्मा के साथ पुद्गलों के स्वयं कर्मरूप बंधने को द्रव्यबंध कहते हैं।

प्रश्न 103 – भाव संवर से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – पुण्य-पाप के विकारी भाव (आस्रव) को आत्मा के शुद्ध (वीतरागी) भावों से रोकना भाव संवर है।

प्रश्न 104 – द्रव्यसंवर से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – भावसंवर के अनुसार नये कर्मों का स्वयं आना रुक जाना द्रव्यसंवर है।

प्रश्न 105 – भाव निर्जरा से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – शुद्ध आत्मा के लक्ष्य के बल से स्वरूप स्थिरता की वृद्धि द्वारा आंशिक शुद्धि की वृद्धि और अशुद्ध (शुभाशुभ) अवस्था का आंशिक नाश करना भाव निर्जरा है।

प्रश्न 106 – द्रव्य निर्जरा से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – भाव निर्जरा का निमित्त पाकर जड़ कर्मों का अंशतः खिर जाना ही द्रव्य निर्जरा है।

प्रश्न 107 – भाव मोक्ष से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – अशुद्ध दशा का सर्वथा सम्पूर्ण नाश होकर आत्मा की पूर्ण निर्मल पवित्र दशा का प्रकट होना ही भाव मोक्ष है।

प्रश्न 108 – द्रव्य मोक्ष से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – बंध के निमित्त कारण द्रव्यकर्म का सर्वथा नाश होना द्रव्य मोक्ष है।

प्रश्न 109 – सावद्य योग किसे कहते हैं?

उत्तर – पाप सहित क्रियाओं को सावद्य कहते हैं और मन, वचन और काय की पाप सहित क्रियाओं को सावद्य योग कहते हैं।

प्रश्न 110 – प्रतिजीवी गुण किसे कहते हैं?

उत्तर – अभावस्वरूप धर्मों को प्रतिजीवी गुण कहते हैं । जैसे– नस्तित्व, अमूर्तत्व, अचेतनत्व, आदि।

प्रश्न 111 – अनुजीवी गुण किसे कहते हैं?

उत्तर – भाव स्वरूप गुणों को अनुजीवी गुण कहते हैं। जैसे– जीव के ज्ञान, दर्शन, चारित्र, सुख आदि।

प्रश्न – स्पर्धक किसे कहते हैं?

उत्तर – वर्गणाओं के समूह को स्पर्धक कहते हैं।

प्रश्न – वर्गणा किसे कहते हैं?

उत्तर – वर्गों के समूह को वर्गणा कहते हैं।

प्रश्न – वर्ग किसे कहते हैं?

उत्तर – समान अविभाग प्रतिच्छेदों के समूह को वर्ग कहते हैं।

प्रश्न – अविभाग प्रतिच्छेद किसे कहते हैं?

उत्तर – जिसका दूसरा अंश न हो सके, शक्ति के ऐसे अविभागी अंश को अविभागी प्रतिच्छेद होता हैं। जैसे - क्षेत्र का छोटा अंश प्रदेश, काल का छोटा अंश समय होता है; वैसे ही शक्ति (भाव) का छोटा अंश अविभागी प्रतिच्छेद है।

प्रश्न – पार्श्वस्थ मुनि किसे कहते हैं?

उत्तर – जो निरतिचार संयम का पालन नहीं करते, वे मुनि पार्श्वस्थ कहलाते हैं।

प्रश्न – विकथा किसे कहते हैं?

उत्तर – पाप की कारणभूत कथा को विकथा कहते हैं। यह चार प्रकार की होती है - स्त्रीकथा, राजकथा, चोरकथा, भक्तकथा (भोजन कथा)।

श्रीमती आभा सुनील जैन, सिडनी (आस्ट्रेलिया)
(Sydney Batch, 2019, Parmagam Honours)
की ओर से Parmagam Honours के सभी विद्यार्थियों को सप्रेम भेंट।

जैन बाल साहित्य के उत्कृष्ट लेखन हेतु अखिल भारतवर्षीय दि. जैन विद्वत्परिषद् द्वारा विद्वत्रत्न की उपाधि से सम्मानित विद्वत्रत्न डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया को ८ मार्च २००८ को महिला दिवस के अवसर पर मुम्बई की महापौर के शुभ कर कमलों से भी सम्मानित किया गया है। आपका जन्म अशोकनगर (म.प्र.) में ३० जनवरी १९५८ को हुआ।

आपके द्वारा एम.ए. में लघुशोध निबंध के रूप में लिखी गई पुस्तक मात्र १९ वर्ष की अवस्था (२७-११-१९७७) में प्रकाशित हो गई।

आधुनिक बाल जैन साहित्य की प्रणेता आपने जैन सिद्धान्तों को सर्वप्रथम पहेलियों के रूप में प्रस्तुत कर जैन बाल साहित्य को नई दिशा प्रदान की है।

आपके द्वारा लिखी गई बाल पुस्तकों में पहेलियों, कविताओं और प्रश्नोत्तर शैली में लिखे गए पाठों के माध्यम से तत्त्वज्ञान एवं भेदज्ञान कराया गया है।

आपने विभिन्न आयुवर्ग को ध्यान में रखकर भिन्न-भिन्न शैलियों में अध्यात्म को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया है। गद्य-शैली, पद्य-शैली, चम्पू (गद्य-पद्य मिश्रित) शैली, पत्रशैली, डायरीशैली, छोटे-छोटे मंचन योग्य नाटक, बड़े-बड़े नाटक आदि साहित्य की विभिन्न विधाओं के दर्शन आपकी कृतियों में होते हैं।

आपके निर्देशन में सर्वप्रथम युवाओं के लिए देश भर में art of happy living नाम से सेमीनार कम वर्कशॉप के अनेकों आयोजन भी किए जाते हैं।

आपके निर्देशन में 'परमागम ऑनर्स' शास्त्री कोर्स का आरम्भ जुलाई २०१६ से हो गया है। इस कोर्स में जैन-अध्यात्म का व्यवस्थित, नियमित अध्ययन और जैन सिद्धान्तों को जीवन में उतारने का तरीका गुरुओं के मार्गदर्शन में सिखाया जाता है। इसमें नई परीक्षा प्रणाली अपनाते हुए Open Book Exam होता है। जिनागम के अध्ययन-अध्यापन के लिए आधुनिक इन्फोर्मेशन टेक्नोलॉजी का उपयोग करते हुए Internet या Teleconfrence call के द्वारा कक्षायें ली जाती हैं। इसका संचालन श्रीमती स्वानुभूति द्वारा किया जाता है।

सम्प्रति आप अपने परिवार के साथ मुम्बई में रहती हैं। जहाँ आपके पति श्री अविनाशकुमार टडैया का हीरे-जवाहरात एवं डायमंड ज्वैलरी का व्यवसाय है।

आपके द्वारा अभी तक छोटी-बड़ी ५० पुस्तकें लिखी गईं हैं।